लाइब्रेरी वाली औरत

हीदर हानसन, चित्र: डेविड

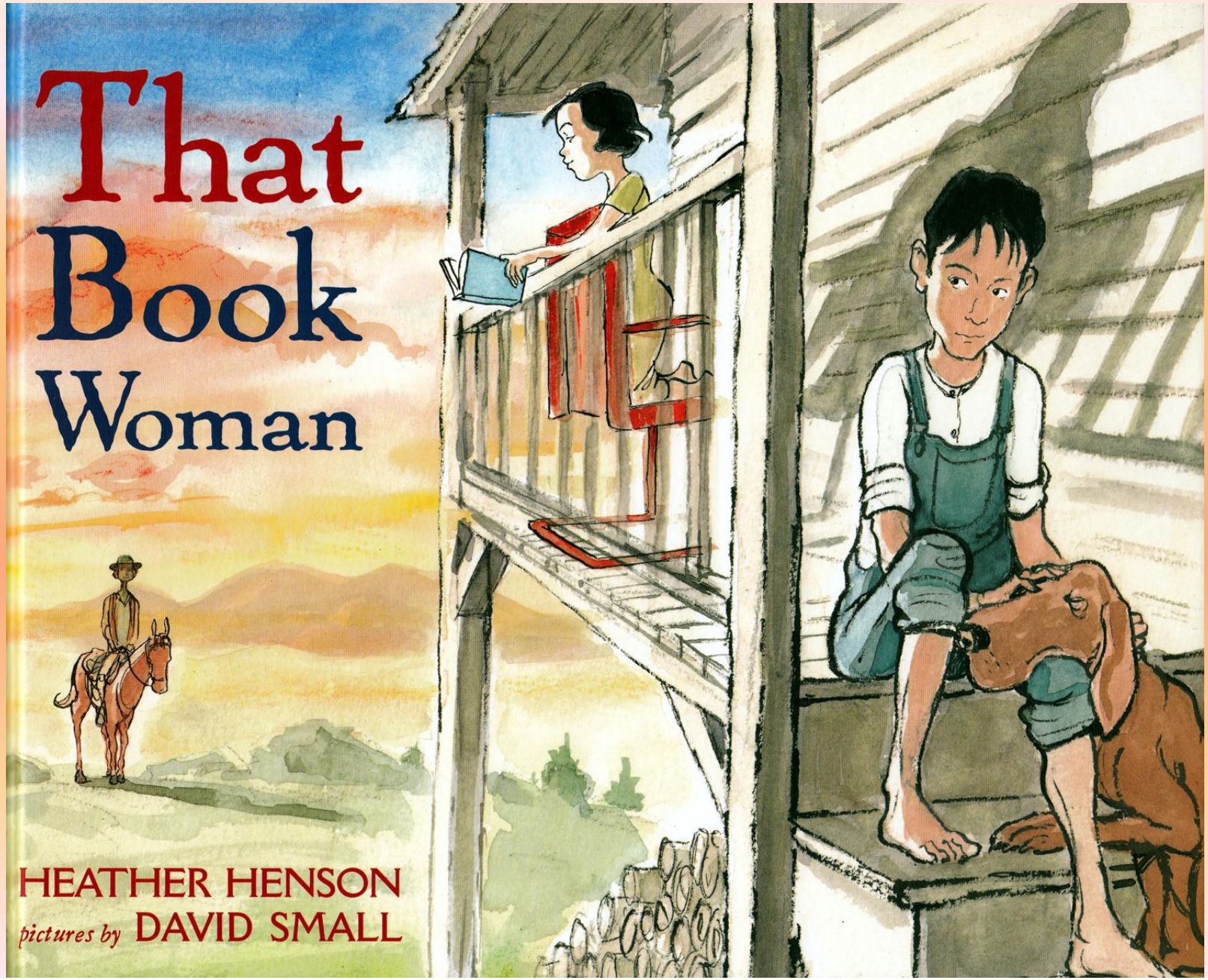

That Book Woman

लाइब्रेरी वाली औरत

हीदर हानसन, चित्र: डेविड

हिंदी : विदूषक

लाइब्रेरी वाली औरत

हीदर हानसन, चित्र: डेविड

हिंदी : विदूषक

That Book Woman

HEATHER HENSON

pictures by DAVID SMALL

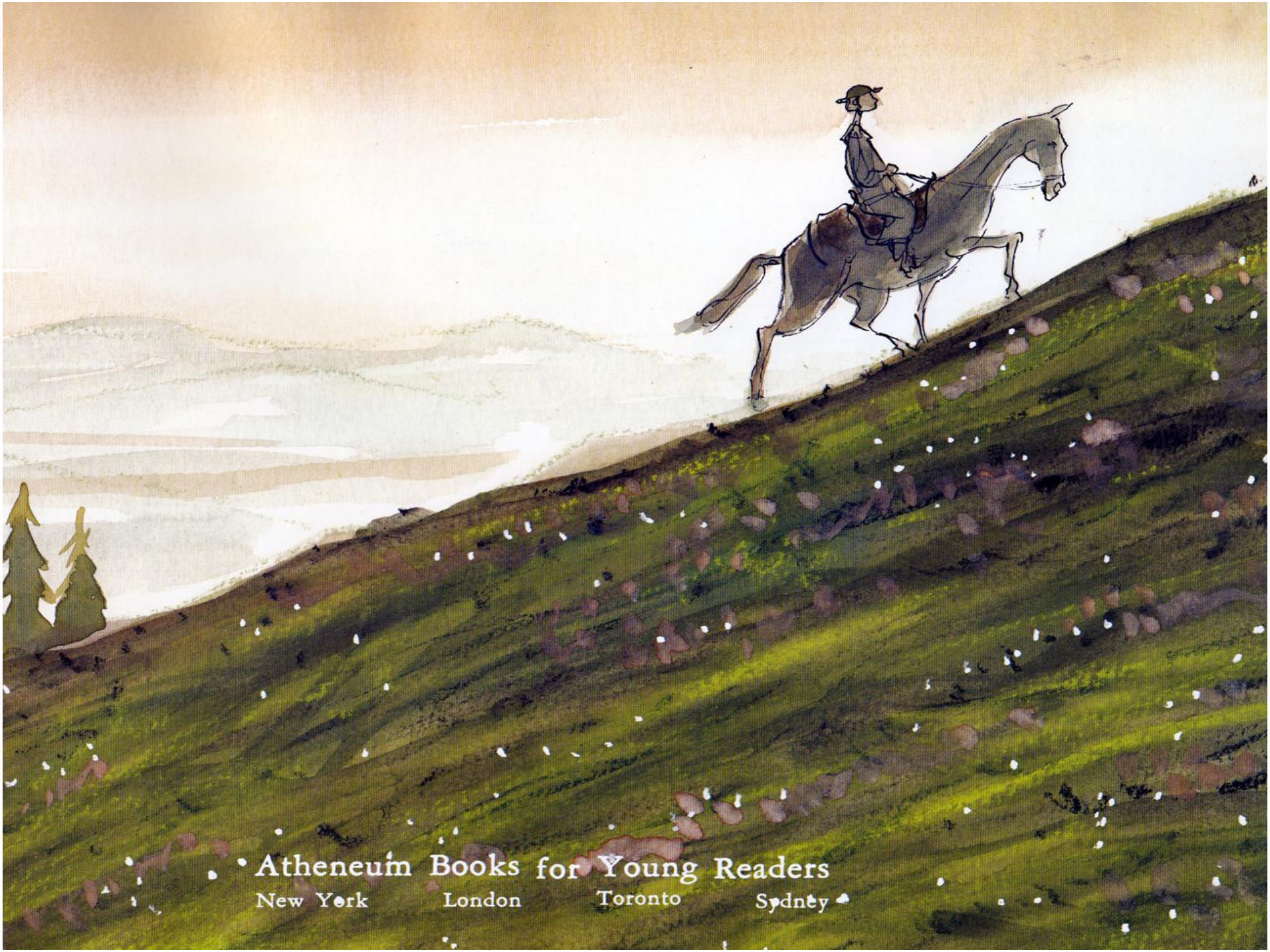
Atheneum Books for Young Readers
New York London Toronto Sydney

मैं और मेरे लोग – बहुत ऊपर पहाड़ियों पर रहते हैं. हम इतनी ऊंचाई पर रहते हैं कि हमें वहां से हमें कोई इंसान दिखाई तक नहीं देता है. हाँ, आसमान में उड़ते हुए बाज़ दिखाई देते हैं और पेड़ों में छिपे जीव दिखते हैं.

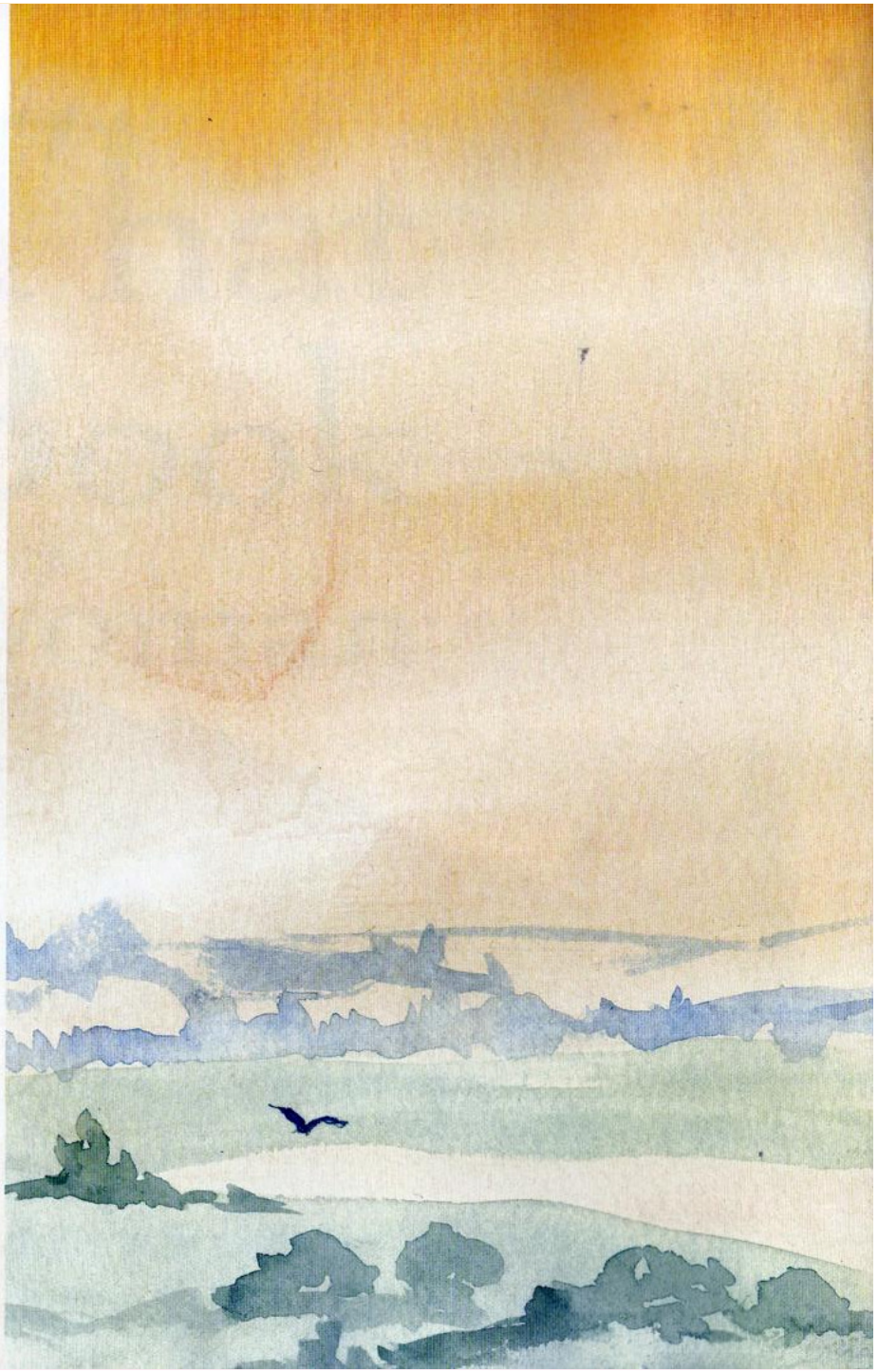

मेरा नाम है कैल. मैं अपने परिवार में न तो सबसे बड़ा हूँ, न ही सबसे छोटा. हाँ, मैं परिवार का सबसे बड़ा लड़का ज़रूर हूँ. मैं हल जोतने में पापा की मदद करता हूँ. जब चरते-चरते भेड़ें भटक कर खो जातीं हैं तो मैं उन्हें ढूँढ कर लाता हूँ.

शाम को मैं गाय को घर लाता हूँ. यह सब बातें ज़िन्दगी जीने के लिए ज़रूरी हैं. दूसरी ओर मेरी बहन लार्क है. वो सुबह से शाम तक, अपना सिर किताब के पन्नों में छिपाए रहती है. माँ भी उसपर गुस्सा नहीं करती हैं. पापा कहते हैं कि लार्क दुनिया में सबसे ज्यादा पढ़ने वाली लड़की है.

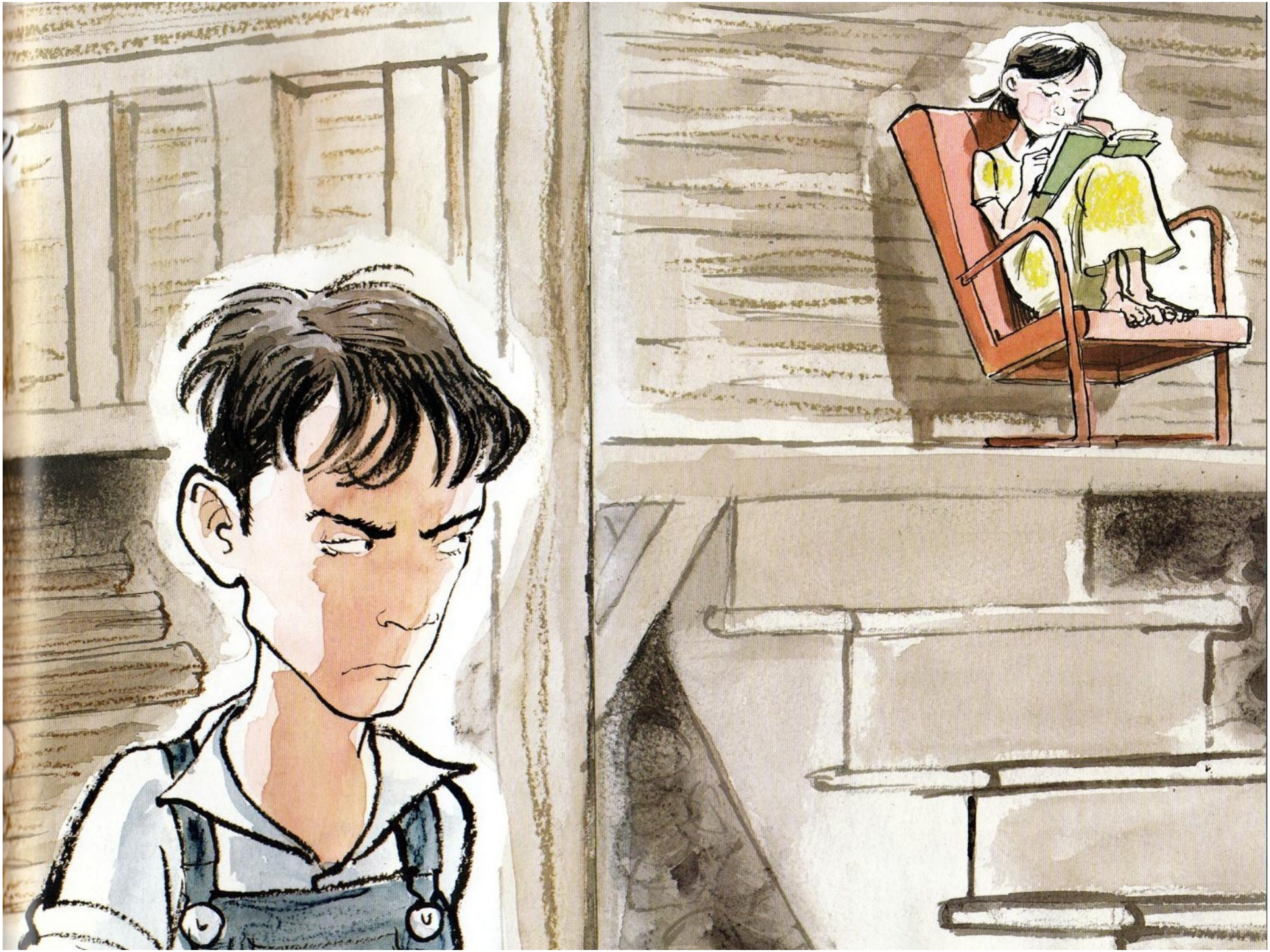

दिन भर किताबें पढ़ना, घंटों चुपचाप बैठे रहना – यह मेरे बस की बात नहीं है. लार्क का "स्कूल-स्कूल" खेल भी मुझे बिल्कुल नापसंद है. हमारी पहाड़ी की चोटी से लेकर नीचे घाटी तक, एक भी स्कूल नहीं है. लार्क अपने हाथ पसार कर, पंखों पर उड़ तो नहीं सकती, इसलिए उसने हम सबको पढ़ाने का बीड़ा उठाया है. पर, मेरा किताबों में बिलकुल मन नहीं लगता है.

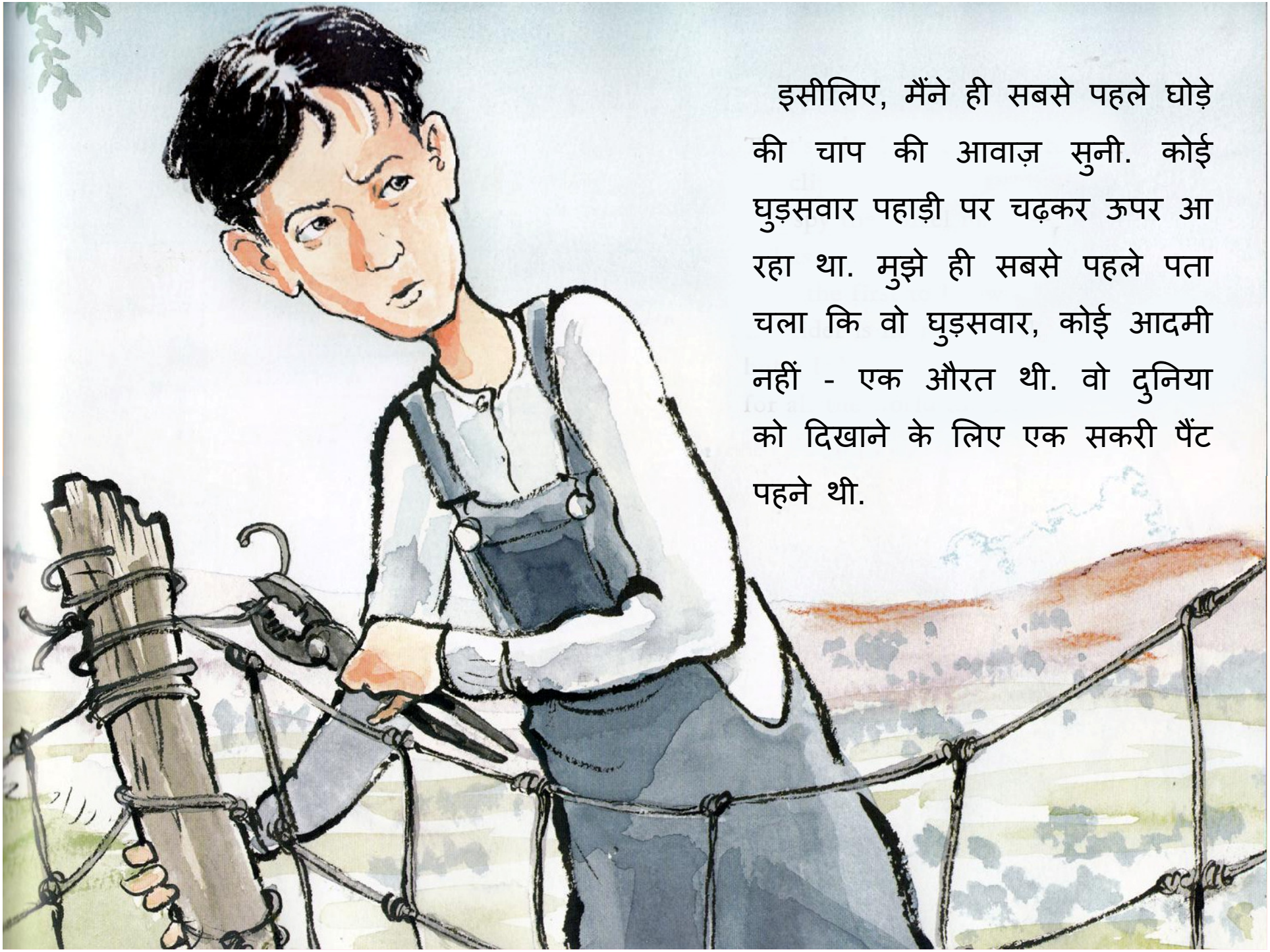

इसीलिए, मैंने ही सबसे पहले घोड़े की चाप की आवाज़ सुनी. कोई घुड़सवार पहाड़ी पर चढ़कर ऊपर आ रहा था. मुझे ही सबसे पहले पता चला कि वो घुड़सवार, कोई आदमी नहीं - एक औरत थी. वो दुनिया को दिखाने के लिए एक सकरी पैंट पहने थी.

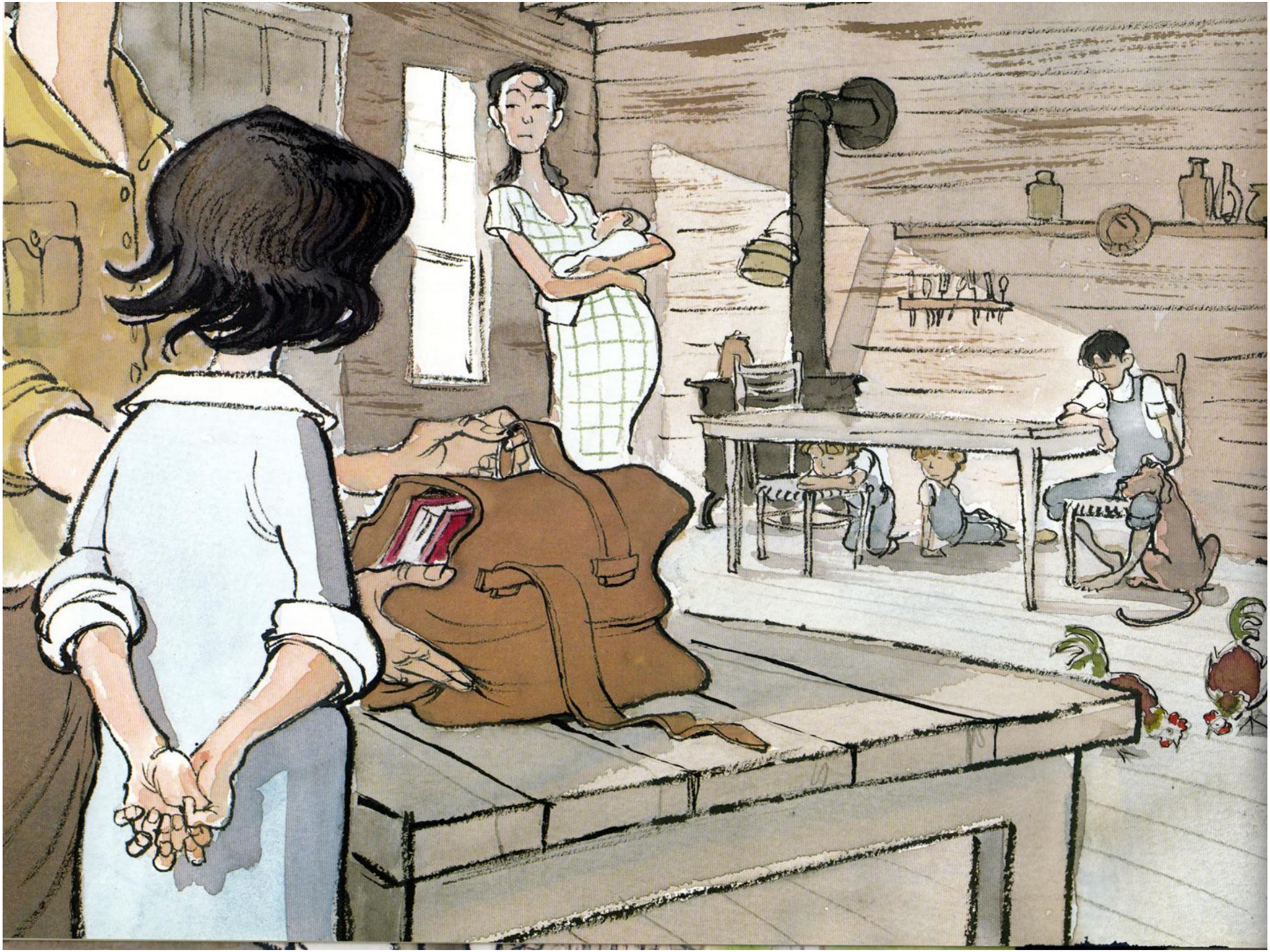

- हम क्या करते? हमने उस अजनबी का स्वागत किया. उसका सलूक भी काफी दोस्ताना था. चाय का प्याला ख़त्म करने के बाद उसने अपने रकसैक को मेज़ पर रखा. उसने रकसैक में से चीज़ें बाहर निकालीं जिन्हें देख कर लार्क की आँखें एकदम सोने के सिक्कों जैसी चमकने लगीं. लार्क उन किताबों के पन्नों को तेज़ी से पलटने लगी. लगता था जैसे वो उन सभी बेशकीमती किताबों को चाटना चाहती थी.

- वो औरत जो कुछ भी लाई थी - यानि किताबें – उनमें मेरी कोई रूचि नहीं थी. क्या आप इस बात पर यकीन करंगे? वो पूरा रकसैक भर कर किताबें लेकर घोड़े पर सवार होकर पहाड़ी पर चढ़ी थी. उसने अपना पूरा दिन बर्बाद किया था. पर मुझे किताबों से भला क्या लेना-देना? मुझे तो ऐसा ही लगा. अगर कोई व्यापारी नीचे तलहटी से बर्तन-भांडे बेचने के लिए इतनी मेहनत-मशक्कत करता, तो मुझे कुछ समझ में भी आता.

- पापा ने लार्क की तरफ एक नज़र डाली और फिर गला साफ़ करते हुए कहा, “लगता है कोई व्यापारी आया है.” उन्होंने कहा, “क्या वो बेरों की एक थैले के बदले हमें एक किताब देगी?”
- यह सुनते ही मैंने पीठे के पीछे अपनी दोनों मुट्ठीयां कसके बंद कीं. मैं बोलने को तिलमिला रहा था पर न जाने क्यूं मेरी हिम्मत नहीं हुई. मैंने बेर के थैले को उठाया – उनसे कुछ खाने की मिठाई बनाने के लिए – न कि किताब खरीदने के लिए!

- उस महिला ने जोर-जोर से अपना हाथ हिलाया. वो बेरों का थैला नहीं लेगी, न ही हरी सब्जियां, और न ही कुछ और चीज़, जो पापा बेंचते थे.
- किताबें बिल्कुल मुफ्त थीं! मुफ्त जैसे साँस लेने वाली हवा! और इतना ही नहीं, वो महिला हर दो हफ्ते बाद वापिस आकर, उन किताबों के बदले हमें और नई किताबें देगी!

जहाँ तक मेरा सवाल था, मुझे उस किताबों वाली औरत से कुछ लेना-देना नहीं था. अगर वो दुबारा हमारे घर का रास्ता भूल भी जाती, तो उससे मुझे भला क्या फर्क पड़ता? पर उसे देख कर मुझे लगा कि वो औरत बारिश, ठण्ड और कोहरे में भी दुबारा वापिस आयेगी. मुझे लगा उसका घोड़ा ज़रूर बहुत बहादुर होगा.

कुछ दिनों बाद बाहर की दुनिया दादाजी की दाढ़ी जैसी सफ़ेद हो गयी. रात के समय हवा इतनी ज़ोरों से साएँ-साएँ करती जैसे की सियाह अँधेरे में उदबिलाव चीख रहे हों. हम लोग ठण्ड से बचने के लिए अलाव जला कर बैठे. और लोगों का क्या हाल होगा उसका हमें पता नहीं. इस कड़क, बर्फीली सर्दी में, कोई जंगली जानवर भी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करता.

पर तभी हमें कांच की खिड़की पर ख़ट-खट की आवाज़ सुनाई दी. बाहर कौन था? वही लाइब्रेरी वाली औरत! वो सिर से पैर तक ढंकी थी! उसने खिड़की से ही लेनदेन किया, जिससे बाहर आने से कहीं हम लोगों को ठण्ड न लग जाए. जब पापा ने उससे रात को रुकने के लिए कहा, तो उसने “न” में अपना सिर हिलाया. “मेरा घोड़ा मुझे सुरक्षित घर पहुंचा देगा,” उसने कहा.

- मैं बस टकटकी लगाए उस किताबों वाली औरत को जाते हुए देखता रहा. मेरे दिमाग में कई बातें उठीं, बिलकुल वैसे ही जैसे दरवाज़े के बाहर स्नोफ़्लेकस उड़ रहे थे. मुझे लगा - न केवल उसका घोड़ा बहादुर था, पर घुड़सवार भी बहुत साहसी थी.
- फिर मुझे बेहद उत्सुकता हुई यह जानने की, कि उस किताबों वाली औरत ने इस बर्फीली ठण्ड में, पूरी पहाड़ी चढ़ने का जोखिम क्यूं लिया?

- फिर मैंने भी उस औरत की दी हुई एक किताब उठाई. उसमें शब्द भी थे और चित्र भी. मैंने उसके पन्ने पलटे. फिर मैंने लार्क से कहा, “इसमें क्या लिखा है, मुझे सिखाओ.”
- लार्क ने मेरी फरमाईश का न तो कोई मज़ाक उड़ाया, और न ही वो मुझ पर हंसी. उसने मुझसे बैठने को कहा, और फिर हम-दोनों ने मिलकर किताब पढ़ी.

एक दिन पापा ने हमें मौसम के हाल के बारे में बताया. उन्होंने कहा - इस साल भविष्यवाणी है कि कड़ाके की ठण्ड पड़ेगी और तेज़ हिमपात होगा. इसलिए पूरे दिन हम मोटे मोज़े-जूते पहनते होंगे. वो तो मुझे मंज़ूर था. फिर भी मेरे दिमाग में एक सवाल लगातार कौंध रहा था.

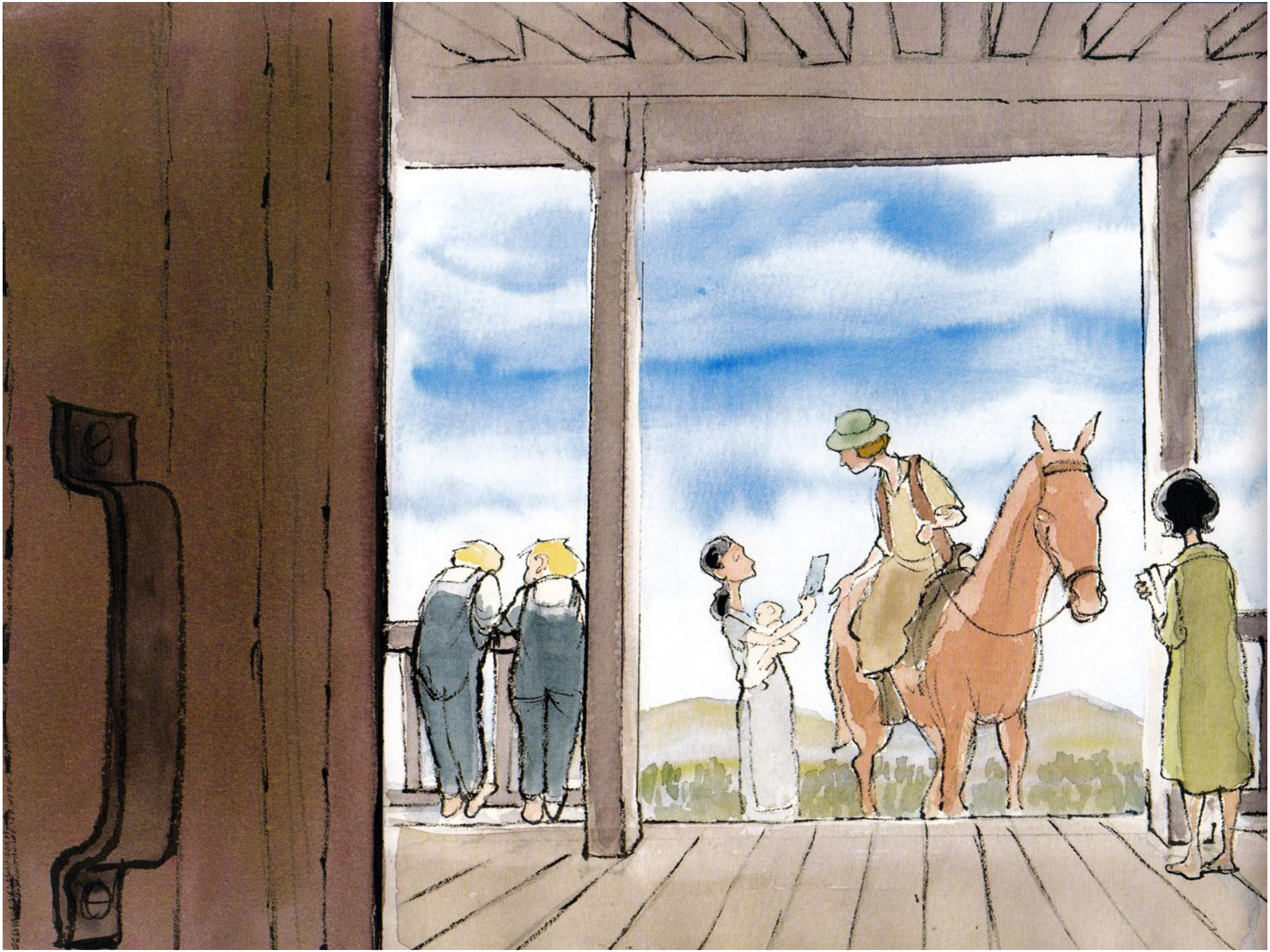

वसंत से पहले किताबों वाली औरत, वापिस आ ही नहीं सकती थी. माँ ने उसके लिए एक उपहार बनाया. माँ ने, किताबों वाली औरत के लिए बेरों की मिठाई बनाई. दुनिया में माँ से अच्छी बेरों की मिठाई और कोई नहीं बना सकता था. फिर माँ ने, किताबों वाली औरत से कहा, “मैं ज्यादा तो नहीं जानती, पर आपने वाकई बहुत मेहनत की.” माँ ने आगे गर्व के साथ कहा, “आपने घर में एक पढ़ने वाले की बजाए - दो बना दिए.”

मैंने शर्म से अपना मुंह छिपा लिया, और मैं सबसे अंत में ही बोला: “काश, मेरे पास आपको देने के लिए कोई उपहार होता.” तब किताबों वाली महिला ने अपनी बड़ी-बड़ी काली आँखों से, मेरी ओर देखा और कहा, “कैल, इधर आओ.”

मैं शर्माते हुए उसके पास गया. “मुझे तुम कुछ पढ़कर सुनाओ,” उसने कहा.

मैंने अपने हाथ की किताब खोली. वो किताब बिल्कुल नई थी - अभी-अभी आई थी. पहले मुझे कुछ समझ में नहीं आता था. पर अब मैं किताब में लिखा समझ पाता हूँ. फिर मैंने किताब में से कुछ पढ़ कर सुनाया.

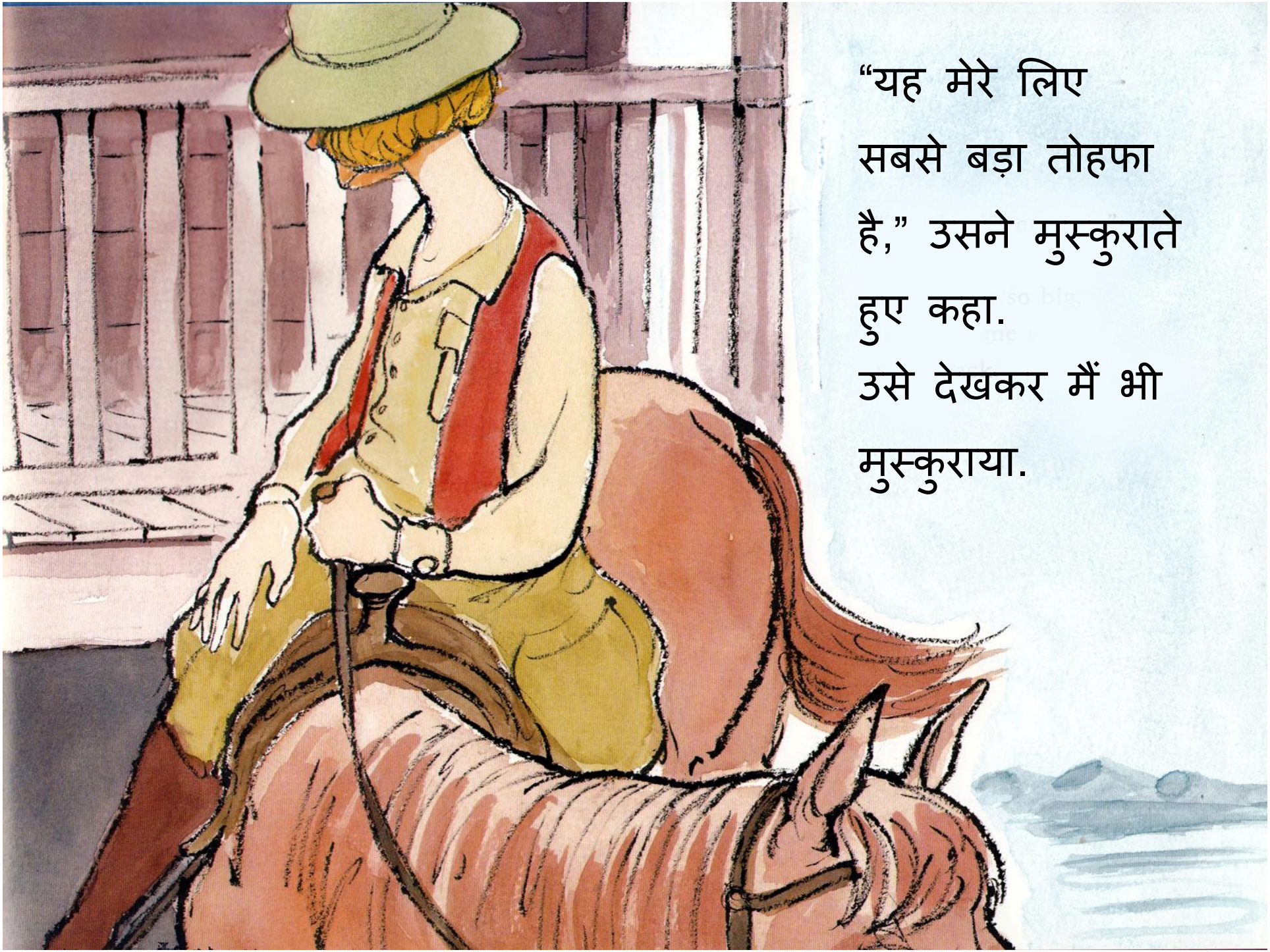

“यह मेरे लिए
सबसे बड़ा तोहफा
है,” उसने मुस्कुराते
हुए कहा.
उसे देखकर मैं भी
मुस्कुराया.

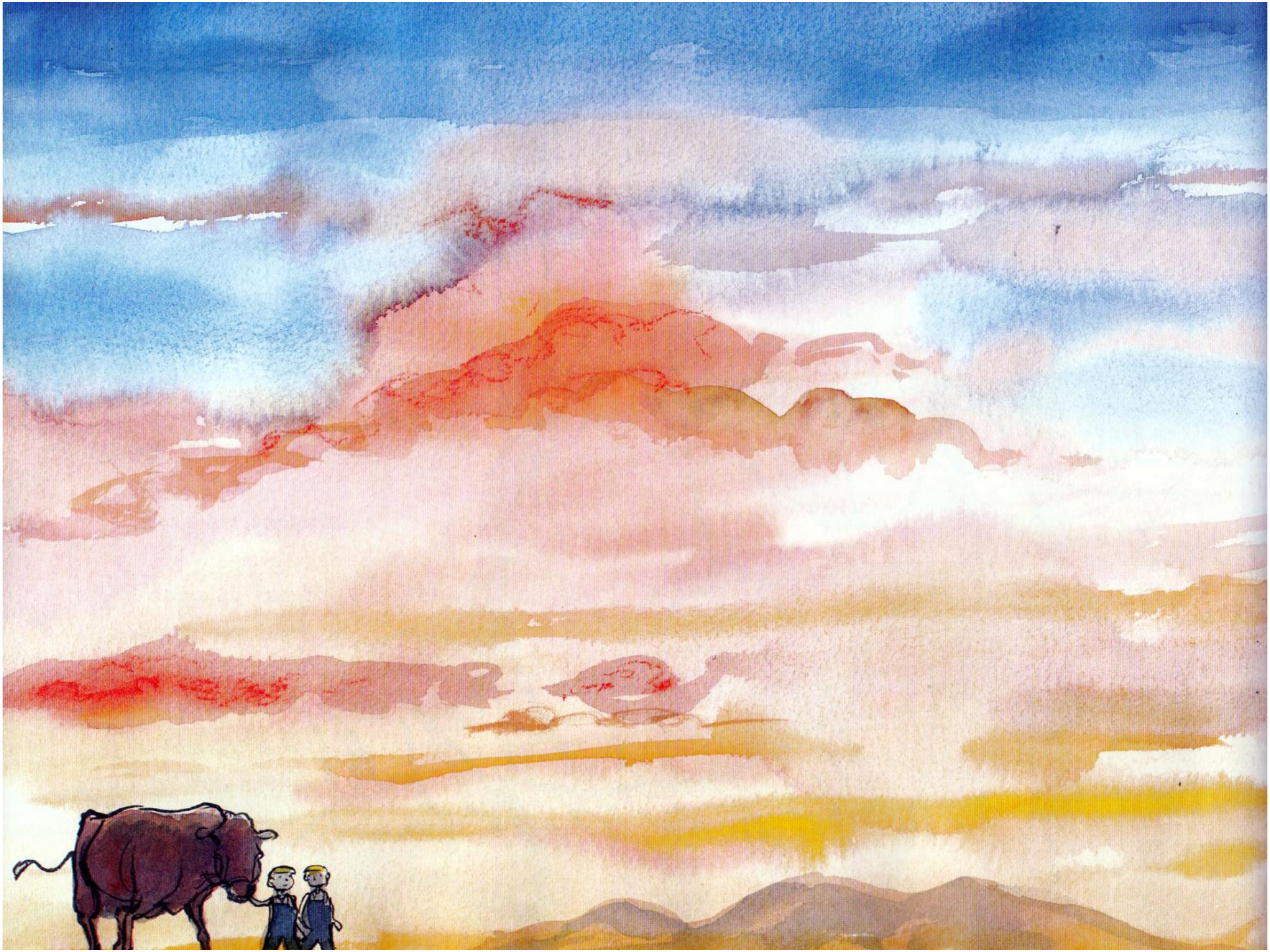

• लेखक का नोट

- यह कहानी सच के साहसी "पैक-हॉर्स लाइब्रेरियनस" के अनुभवों से प्रेरित है. केंटकी, अमरीका के एप्पलेशियन पहाड़ियों में लोग उन्हें "किताबों वाली औरतों" के नाम से भी बुलाते थे.
- "पैक-हॉर्स लाइब्रेरियनस" प्रकल्प की स्थापना 1930 में हुई. राष्ट्रपति फ्रेंक्लिन डी. रूसवेल्ट के प्रगतिशील प्रशासन के दौरान, उन दूर-दराज़ के इलाकों में किताबें पहुंचानी थीं, जहाँ न तो स्कूल थे और न ही कोई लाइब्रेरी. केंटकी की ऊंची पहाड़ियों में तो सड़कें तक नहीं थीं. वहां केवल पथरीली पगडंडियाँ थीं. "किताबों वाली औरतें" उस दूभर इलाके में घोड़ों या खच्चरों से, यात्रा करती थीं. वो हर दो हफ़्तों में, किताबों से भरा एक बोरा लेकर वहां जातीं थीं. मौसम चाहें कैसा भी हो वो बिना नागे वहां पहुँचती थीं. इस "मुफ्त" के अहसान को चुकाने के लिए पहाड़ियों के लोग जो कुछ उनके पास होता उन्हें उपहार में देते – बाग़ की सब्जियां, जंगली फूल, बेर और स्वादिष्ट भोजन बनाने की "रेसिपीज" जिन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी आजमाया गया था.
- "पैक-हॉर्स लाइब्रेरियनस" में कुछ मर्द भी थे, पर ज़्यादातर औरतें ही थीं. यह उस ज़माने की बात है जब लोगों का मानना था "कि औरतों का काम सिर्फ घर पर ही होता है." "किताबों वाली औरतों" में अपने काम के प्रति बेहद लगन और टिकने की ज़बरदस्त क्षमता थी. उन्हें बहुत कम वेतन मिलता था, पर उन्हें लगता था कि वो एक नायाब काम कर रही हैं - वो एप्पलेशियन पहाड़ियों के लोगों के लिए बाहर की पूरी दुनिया ला रही हैं. उन्होंने कितने ही अनपढ़ लोगों की किताबों में रूचि जगाई और उन्हें पढ़ने की लत लगवाई.
- धीरे-धीरे केंटकी की पगडंडियाँ पक्की सड़कों में बदलीं. घोड़ों और खच्चरों का स्थान "किताबों की बस" ने लिया.
  यह सिलसिला आज भी जारी है. आज भी पूरे देश में, कर्मनिष्ठ लाइब्रेरियनस उन लोगों तक रोचक पुस्तकें पहुंचाते हैं जिन्हें उनकी सबसे ज्यादा ज़रुरत है.

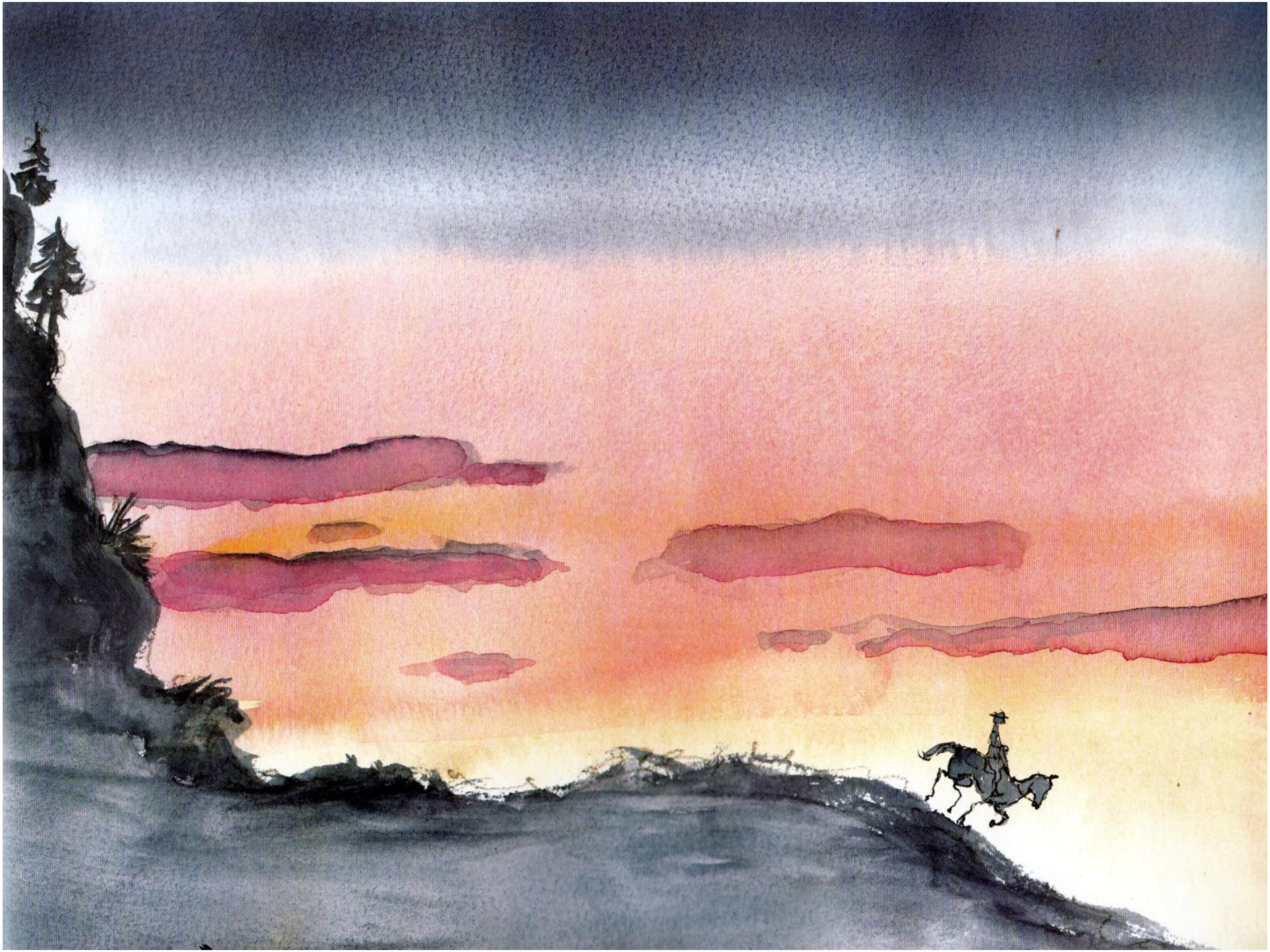

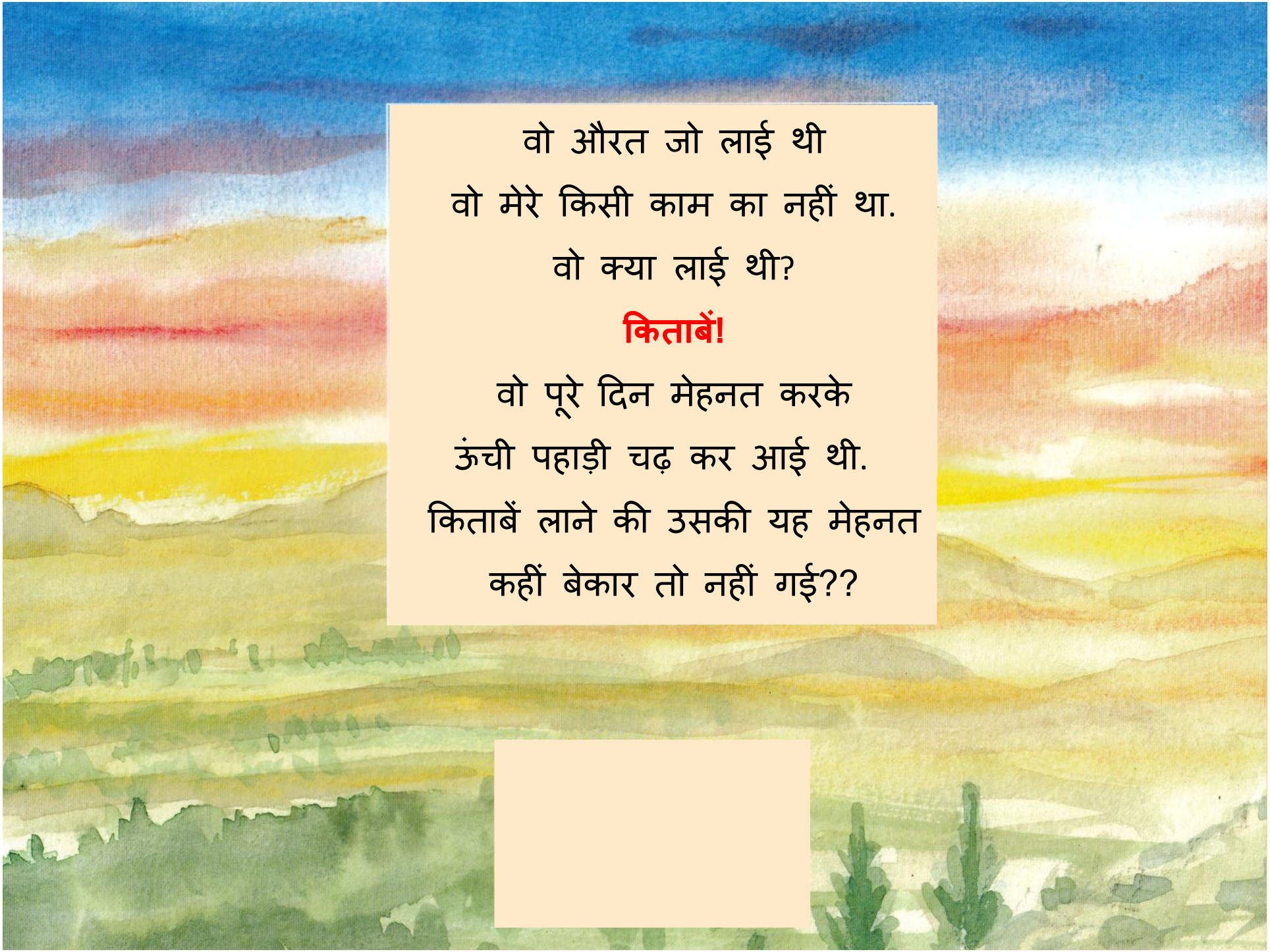
वो औरत जो लाई थी
वो मेरे किसी काम का नहीं था.
वो क्या लाई थी?
किताबें!
वो पूरे दिन मेहनत करके
ऊंची पहाड़ी चढ़ कर आई थी.
किताबें लाने की उसकी यह मेहनत
कहीं बेकार तो नहीं गई??